ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 17 कुल पृष्ठ-8 4 से 10 जुलाई, 2024 दयानन्दाब्द 199 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 वै. कृ.-09

नशामुक्त भारत निर्माण के लिए आर्य समाज चलायेगा राष्ट्रीय आन्दोलन – स्वामी आर्यवेश

प्रमुख आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं के पांच दिवसीय चिन्तन शिविर, कौसानी (उत्तराखण्ड) में लिया गया निर्णय

देश के विभिन्न प्रदेशों से प्रमुख कार्यकर्ता एवं आर्य नेता चिन्तन शिविर (कैप्सूल कैम्प) में हुए सम्मिलित

हम उत्तराखण्ड को नशामुक्त बनायेंगे – गोविन्द सिंह भण्डारी

नशामुक्त भारत ही विश्व गुरु के पद को प्राप्त कर सकता है – स्वामी आदित्यवेश

आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं आर्य नेताओं का राष्ट्रीय चिन्तन शिविर (कैप्सूल कैम्प) गत् 24 जून, 2024 से 29 जून, 2024 तक अनाशक्ति गांधी आश्रम, कौसानी, जिला–पिथैरागढ़, उत्तराखण्ड में अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर में सभी शिविरार्थियों को आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ ध्यान साधना एवं अध्यात्म का प्रशिक्षण दिया वहीं वैदिक सिद्धान्तों की गम्भीर विवेचना एवं शंका–समाधान का भी विशेष प्रतिदिन बौद्धिक सत्रों के माध्यम से चलता रहा। स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ आर्य समाज द्वारा प्रचारित–प्रसारित वैदिक सिद्धान्तों एवं मान्यताओं के सम्बन्ध में सरल एवं सहज विधि से शिविरार्थियों को समझाया, वहीं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ज्वलन्त मुद्दों पर प्रतिदिन गहन चिन्तन–मनन होता रहा। प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक अत्यन्त व्यस्त दिनचर्या एवं कार्यक्रम से बंधे सभी शिविरार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते रहे।

इस अवसर पर उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एवं आर्य समाज के जुझारू नेता श्री गोविन्द सिंह भण्डारी ने अपने अन्य सभी साथियों के सहयोग से शिविर की सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व निष्ठा के साथ निभाया। शिविर के उद्घाटन सत्र में क्षेत्र की जानी–मानी हस्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर अपने सहयोग का आश्वासन प्रदान किया। उद्घाटन सत्र में क्षेत्र के जाने–माने व्यक्तित्व श्री भैरवनाथ टमटा, प्रसिद्ध साहित्यकार श्री गोपालदत्त भट्ट, विख्यात कवि एवं साहित्यकार श्री मोहनचन्द्र जोशी, उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मंत्री श्री दयाकृष्ण कांडपाल, बाल कल्याण विभाग के अधिकारी श्री शंकर गोस्वामी, अनाशक्ति गांधी आश्रम के श्री सदानन्द, श्री हरिराम शास्त्री, श्री अशोक कुमार सिंह, श्री जीवन सिंह, श्री महेश किशोर एवं बहन रंजना सिंह एडवोकेट आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार समापन समारोह में भी आर्य समाज अल्मोड़ा के प्रधान श्री दिनेश तिवारी, श्री दयाकृष्ण कांडपाल, श्री महीप सिंह एडवोकेट, श्री विनोद कुमार भट्ट एडवोकेट पूर्व बॉर कॉउसिल बागेश्वर, श्री मनोज कुमार, गांधी आश्रम के व्यवथापक श्री पाण्डेय जी आदि ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

समापन समारोह में स्वामी आर्यवेश जी ने सभी प्रमुख साथियों द्वारा गहन चिन्तन–मनन के उपरान्त लिये गये निर्णय की घोषणा की। स्वामी जी ने कहा कि आज पूरा देश नशे की गिरफ्त में फंसता जा रहा है। देश की प्रान्तीय एवं केन्द्र सरकार शराब की दुकानें खोलने के लिए लोगों को लाइसेंस देती हैं और उसके बदले लाखों करोड़ रुपया लोगों की जेबों से सरकारें निकाल रही हैं। विकास के नाम पर कमाये जा रहे आबकारी के इस टैक्स से देश की आम जनता विशेषकर गरीब, किसान, मजदूर एवं युवा विनाश की ओर जा रहे हैं। नशे विशेषकर शराब के सेवन से घरों में मातृशक्ति सबसे अधिक प्रभावित एवं पीड़ित है। ऐसी स्थिति में पूरे देश की आत्मा को जगाने एवं सरकारों को पूर्ण नशाबन्दी के लिए बाध्य करने के लिए आवश्यक है कि राष्ट्रीय स्तर पर नशामुक्त भारत निर्माण का जबरदस्त अभियान एवं आन्दोलन चलाया जाये। कौसानी के इस ऐतिहासिक स्थल से जारी घोषणा पत्र के अनुसार अब आर्य समाज पूरे देश में शराब तथा अन्य सभी नशीले पदार्थों के विरुद्ध जन–जागरण अभियान एवं प्रचण्ड आन्दोलन चलायेगा। इसके लिए राष्ट्रीय, प्रान्तीय एवं जिला स्तर पर समितियों का गठन किया जायेगा और जिला स्तर की समितियाँ गांव स्तर की समितियों का भी गठन करेंगी, ताकि देश के प्रत्येक गांव से नशामुक्त भारत की आवाज उठे। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य नशाबन्दी के लिए राष्ट्रीय नीति घोषित करवाना होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने इस घोषणा पत्र के माध्यम से देश में बढ़ते हुए जातिवाद के जहर एवं साम्प्रदायिकता की नफरत को भी देश के लिए खतरनाक बताया। उन्होंने कहा कि आज पूरा देश जातिवाद एवं सम्प्रदायवाद में बंटा हुआ है और सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर इसे घटाने के बजाय बढ़ावा दिया जा रहा है। अतः आर्य समाज अन्य संगठनों को साथ लेकर इन मुद्दों पर कार्य करेगा, ताकि पूरे देश में इनके विरुद्ध वातावरण तैयार किया जा सके। देश में बढ़ते हुए धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड को एक चुनौति मानते हुए आर्य समाज कमर कसकर अभियान चलायेगा और शास्त्रार्थ एवं संवाद की परम्परा को प्रारम्भ करेगा। पूर्व में चलाये जा रहे बेटी बचाओ अभियान को आर्य समाज तीव्रता चलायेगा और कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या एवं महिलाओं पर होने वाले सभी प्रकार के उत्पीड़न एवं अपमान के विरुद्ध जन–जागरण अभियान चलायेगा। उपरोक्त प्रमुख मुद्दों पर आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता, संन्यासी, वानप्रस्थी, आर्य समाजों के पदाधिकारी, सभाओं के पदाधिकारी आदि को संकल्प के साथ जुटना होगा ताकि देश के लोगों को आर्य समाज के गौरवपूर्ण इतिहास का पुनः स्मरण कराया जा सके।

इस अवसर पर उत्तराखण्ड के जुझारू आर्यनेता श्री गोविन्द सिंह भण्डारी ने जोरदार शब्दों में घोषणा की कि वे उत्तराखण्ड को नशामुक्त बनाने के लिए सिर–धड़ की बाजी लगा देंगे। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड के सभी जन–संगठनों एवं धार्मिक तथा सामाजिक संगठनों को साथ लेकर आर्य समाज उत्तराखण्ड की पवित्रता को सुरक्षित एवं संरक्षित करने के लिए शीघ्र ही प्रान्त स्तर की एक विशाल बैठक बुलाकर योजना तैयार करेगा। उनके इस प्रस्ताव का श्री दयाकृष्ण कांडपाल अल्मोड़ा, स्वामी सर्वेश्वर जी महाराज बागेश्वर, श्री मनोज कुमार भवाली, आचार्य विश्वमित्र रूद्रपुर, श्री दिनेश तिवारी प्रधान आर्य समाज अल्मोड़ा, श्री महीप सिंह एडवोकेट कांडा, सुश्री रंजना सिंह एडवोकेट बागेश्वर आदि ने भी पुरजोर शब्दों में अनुमोदन किया।

आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री ने अपने ओजस्वी शब्दों में घोषणा की कि नशामुक्त भारत ही विश्व गुरु के पद को प्राप्त कर सकता है। इसके लिए आर्य समाज के हजारों नवयुवकों को अभियान से जोड़ा जायेगा। वे सभी आर्य युवा संगठनों, छात्र संगठनों तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं से जुड़े युवकों को इस मुद्दे पर कार्य करने के लिए संगठित करेंगे। यह शिविर अत्यन्त प्रभावशाली रहा तथा इसमें कौसानी घोषणा पत्र तैयार किया गया। शिविर की व्यवस्था एवं संचालन में अनाशक्ति गांधी आश्रम के प्रबन्धक आदरणीय श्री पाण्डेय जी, श्री सदानन्द जी व उनके सभी कार्यकर्ताओं एवं कर्मचारियों ने अपना सात्विक योगदान दिया। शिविर बड़े उत्साह एवं नई ऊर्जा के साथ सम्पन्न हुआ। यहाँ यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि सन् 1929 में महात्मा गांधी जी कौसानी में दो दिन के लिए पधारे थे, किन्तु यहां आने के बाद वे 14 दिन तक यहाँ रुके और उन्होंने उस वक्त कहा था कि कौसानी भारत का स्टिजरलैण्ड है। यहीं पर गांधी जी ने अनाशक्ति योग की प्रस्तावना लिखी थी और कौसानी से बागेश्वर की पद यात्रा करके अंग्रेजों द्वारा पहाड़ की जनता पर किये जा रहे अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध जन–जागृति की थी। गांधी जी के इस ऐतिहासिक प्रवास के आधार पर इस स्थान का बाद में अनाशक्ति गांधी आश्रम से प्रसिद्ध किया गया। कौसानी में जाने–माने कवि एवं लेखक श्री सुमित्रानन्दन पंत का स्मारक है। यहीं पर उनका जन्म हुआ था और जन्म के 6 घण्टे बाद उनकी माता का देहान्त हो गया था। उनका लालन–पालन उनके पिता जी की बहन ने किया और बाद में वे अधिक समय तक इलाहाबाद में रहे। किन्तु उनके देहावसान के पश्चात् उनके इस जन्म स्थान को एक संग्रहालय के रूप में लोकार्पित किया गया। आज इस संग्रहालय में उनके जीवन से जुड़ी सभी स्मृतियों एवं उनकी महत्त्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह अत्यन्त दर्शनीय है। कौसानी में ही देश की जानी–मानी सामाजिक कार्यकर्ता पूज्या राधा बहन का भी विशाल संस्थान है। पूज्या राधा बहन ने समस्त उत्तराखण्ड और पहाड़ी क्षेत्र में नशाबन्दी व अन्य सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध लम्बे समय तक कार्य किया है। इस समय उनकी आयु 80 वर्ष से ऊपर हो चुकी है, फिर भी समय–समय पर वे जन–चेतना के कार्य को अपना सम्बल प्रदान करती रहती हैं। हमारे पिछले वर्ष के कैप्सूल कैम्प में पूज्या राधा बहन पधारीं थी और उनके मुखारबिन्दु से आर्य समाज की प्रशस्ति सुनकर हम सभी को विशेष आनन्द हुआ था।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

मृत्यु पर विजय

द स्व० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

हमने आज जान लिया है कि मनुष्य का ध्येय अमृत की प्राप्ति है और अमृत दुःख से अमिश्रित सुख (आनन्द) का नाम है अब हमें इस प्रश्न पर विचार करना चाहिये कि अमृत की प्राप्ति का क्या उपाय है?

इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिये हमें उपनिषद् के उन दो मन्त्रार्थों पर विस्तार से विचार करना चाहिये, जिनकी व्याख्या आठवें और नवें अध्याय में की जा चुकी है। वे मन्त्रार्थ ये है–

अविद्यया मृत्युन्तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।
विनाशेन मृत्युन्तीर्त्वा सम्भृत्याऽमृतमश्नुते।।

मनुष्य कर्मों के ज्ञान से मृत्यु को तर कर विद्या से अमृत प्राप्त करता है। मनुष्य प्राकृतिक जगत् को जान कर मृत्यु को तरता और नित्य आध्यात्मिक तत्वों को जान कर अमृत प्राप्त करता है।

इन दोनों मन्त्रार्थों का सम्बन्ध उपनिषद् के पहले मन्त्र से है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतञ्समाः।

मनुष्य कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जीने का प्रयत्न करे क्योंकि वह कर्तव्य कर्मों के करने से मृत्यु के पार हो सकता है। कर्त्तव्य कर्मों का पालन तभी हो सकता है जब मनुष्य इस जगत् को भली प्रकार जान ले। इस क्रम को उलट कर कहा जाये तो वह सुगमता से समझ में आ जायेगा।

मनुष्य के लिये उचित है कि वह पहले स्थूल अनित्य जगत् का ज्ञान प्राप्त करे। तब वह अपने कर्त्तव्य कर्मों को समझ सकेगा और उनका पालन कर सकेगा। यदि वह अपने जीवन को कर्त्तव्य कर्मों के भली प्रकार पालन करने में व्यतीत करेगा। तो वह मृत्यु के भय से मुक्त हो जायेगा। मरना तो प्रत्येक मनुष्य को है, परन्तु सत्कर्म करते हुए जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य को मृत्यु का भय नहीं रहता। जब उसके सामने गहरी और तूफानी नदी की तरह भयानक मौत आती है, तब वह उससे नहीं डरता क्योंकि उसने सत्कर्मों की नौका तैयार कर ली है। उसे भरोसा रहेगा कि वह उस नौका के प्रताप से परलोक में सद्गति को प्राप्त करेगा। यही मृत्यु रूपी नदी को तैर कर पार करना है।

जिस मनुष्य ने जीवन में अच्छे कर्म नहीं किये, उसके लिये मृत्यु बहुत भयानक होती है यदि उसे परलोक में या ईश्वर में विश्वास नहीं तो उसे मरने के समय अपने सब दुःखों और मन्सूबों का अन्त दिखाई देता है। यदि वह पुनर्जन्म को मानता है तो उसे दूसरे जन्म में मिलने वाली अन्धकारमय योनियों और यातनाओं की झलक दिखाई देने लगती है। वह मृत्यु को देख कर घबरा जाता है, रोता और चिल्लाता है। परन्तु जिस मनुष्य ने सत्कर्म करने में जीवन व्यतीत किया है, उसके लिये मृत्यु केवल दशा का परिवर्तन है, समाप्ति नहीं।

भगवद्गीता में कहा है–

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्या नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

जैसे मनुष्य पुराने कपड़ों को उतार कर नये कपड़े पहनता है वैसे ही वह पुराने शरीर को छोड़ कर नये शरीर को धारण कर लेता है। मनुष्य जीवन का सूत्र मृत्यु से टूटता नहीं केवल उसका रूप बदल जाता है। जिस मनुष्य को यह विश्वास है कि वह अगले जन्म में कर्मों के अनुसार सद्गति को प्राप्त होगा, वह शान्त हृदय से मृत्यु का सामना करता है। कभी–कभी तो वह नये शरीर से नया परोपकारी और सत्यनिष्ठ जीवन व्यतीत करने की प्रसन्नता में मृत्यु का स्वागत भी करता है।

भगवद्गीता में उपनिषदों के इसी अभिप्राय की व्याख्या विस्तार से की गई है। वहां इसे 'कर्मयोग' यह सार्थक और सुन्दर नाम दिया गया है। भगवद्गीता में कहा है–

नहि कश्चित्क्षणमपि जतु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कम सर्वः प्रकृतिजैर्गुणः।।

कोई मनुष्य क्षण भर भी कुछ न कुछ कर्म किये बिना नहीं रह सकता। स्वाभाविक गुण उसे कर्म करने के लिये प्रवृत्त करते हैं। स्पष्ट है कि यदि वह इच्छा–पूर्वक अपने कर्म नहीं करेगा। तो विषय–वासना उससे बुरे कर्म करायेंगी। जो लोग दृश्यमान कर्म छोड़ कर केवल मन से विषयों का चिन्तन करते रहते हैं, उनके विषय में भगवद्गीता में कहा है –

कर्मेन्द्रियाणि संयम्प य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।

जो मनुष्य हाथ पांव आदि कर्मेद्रियों को रोक कर, केवल ज्ञानेन्द्रियों से विषयों का चिंतन करता रहता है, वह मिथ्या आचरण वाला कहलाता है। इस कारण भगवद्गीता का उपदेश है–

तस्मादसक्तः सततं कार्य कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुषः।।

हे अर्जुन ! तू आसक्तिरहित होकर निरंतर कर्त्तव्य कर्मों को करता जा। इस प्रकार आसक्तिरहित कर्म करने से मनुष्य ईश्वर के समीप तक पहुँच जाता है।

अमृत तक पहुँचने के लिये जो यात्रा की जाती है, उसका पहला पड़ाव है मृत्यु को तैरना अर्थात् मृत्यु के भय से मुक्त होना। मर्त्य को मरना तो अवश्य ही है परन्तु उसका भय बना रहना बुरा है क्योंकि वह इस बात का सूचक है कि मनुष्य ने जो कर्म किये हैं वे खोटे हैं। वह उनके परिणाम से डरता है।

जिस मनुष्य को यह विश्वास हो जाता है कि मृत्यु से केवल आत्मा का चोला बदलता है, समाप्ति नहीं होती, और जिसे यह भरोसा हो जाता है कि इस जन्म में किये सुकर्मों के कारण चोला बदलने पर भी उसे दुःख नहीं होगा, वह मृत्युंजय हो जाता है। वस्तुतः उसने मृत्यु की बैतरणी नदी को पार कर लिया।

अपरा से परा की ओर

मुण्डकोपनिषद् में बताया है–

द्वे विद्ये वेदितव्ये इतिहा स्म ब्रह्म विदो वदन्ति परा चैवापरा च।

तत्रापरा ऋग्वेदों यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमित। अन्या परा यया तदक्षरमधिगम्यते।

ब्रह्मवेत्ता लोग कहते हैं कि दोनों विद्याये जाननी चाहिये, एक अपरा, दूसरी परा। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ये सब अपरा विद्या हैं। परा विद्या वह जिससे वह (अक्षर) अविनाशी ब्रह्म प्राप्त होता है। 'ब्रह्मैवेदममृतम्' यह ब्रह्म ही अमृत है।

अपरा और परा विद्या का भेद उपनिषदों में अन्य स्थानों पर भी बतलाया गया है। शब्द भिन्न हैं परन्तु भाव यही है। यह प्रसंग छान्दोम्य के सप्तम अध्याय का है–

नारद मुनि ने भगवान् सनत्कुमार के पास जाकर कहा कि हे भगवन् ! मुझे उपदेश दीजिए। सनत्कुमार बोले कि हे नारद! जो कुछ आप जानते हो वह बतलाओ, तब मैं आगे कहूँ। नारद ने उत्तर दिया कि हे भगवन् ! मैंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ये चार वेद और वेदों को समझाने वाले इतिहास पुराण, पित्र्य, राशि, निधि वाकोवाक्य, एकायन, देवविद्या, ब्रह्मविद्या, भूतविद्या, क्षत्रविद्या, नक्षत्रविद्या, सर्पदेवजनविद्या आदि सभी कुछ पढ़ा है। परन्तु–

सोऽहं भगवो मन्त्रविदेवास्मि नान्मच्छ्रि तञ ह्येव मे भगवदृशेभ्यस्तरति शोकमात्म वदिति, सोऽहं भगवः शोचामि तं मा भगवाञ्छोकस्य पारंतारयत्विति। तञ होवाच यद्वै किचैतदध्यगीष्ठाः नामैवैतत्।

हे भगवन् मैं (यह सब कुछ पढ़ कर) केवल इन मन्त्रों का वेत्ता बना हूँ, आत्मा को नहीं जान सका। मैंने सुना है कि जो आत्मवित् है वह शोक से छूट जाता है। परन्तु मैं तो भगवन् शोक में फंसा हुआ हूँ। सो भगवन् आप मुझे शोक सागर से पार कीजिये।

(यह सुनकर) भगवान् सनत्कुमार ने कहा कि यह जो कुछ तुमने पढ़ा है, वह तो केवल नाम है। इस का फल भी केवल उतना ही होगा जितना नाममात्र का होता है।

इस प्रकार केवल शाब्दिक ज्ञान की अपूर्णता को बतला कर शोक–सागर से पार होकर अमृत प्राप्त करने के लिये 'आत्मा' के स्वरूप का उपदेश दिया है। अन्त में कहा है–

'यो वै भूमा तदमृतमथ यदल्पं तन्मर्त्यम्'

जब मनुष्य अपने को (सम्पूर्ण ब्रह्माड के समान) महान् अनुभव करने लगता है, तब यह अमृत हो जाता है, वह मर्त्य तभी तक रहता है, जब तक अपने को अल्प (छोटा क्षुद्र और परिमित) समझता है।

शास्त्रों का और विज्ञान का ज्ञान मनुष्य को नाममात्र का बोध कराता है, संसार के जंजाल से ऊपर नहीं उठता, संसार के जंजाल से ऊपर उठकर अमृत तत्व की प्राप्ति के लिये मनुष्य को आत्मज्ञान की आवश्यकता है। जब वह आत्मा के स्वरूप को जान कर उसे अनुभव करने लगता है तब वह ब्रह्मज्ञान और अमृत तत्व का अधिकारी हो जाता हैं

जिसे उपनिषत्कार ने नाममात्र का बोध कहा है, वह अपरा विद्या है, और उसके आगे जो आत्मा का बोध और अनुभव होता है, वह परा विद्या है!

उपनिषत्कार ने अपरा और पराविद्या में जो भेद किया है, वह वेद के इस मन्त्र की विशद् व्याख्या है–

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।

ऋ. १.१६४.३६

ऋचायें और सब दिव्य पदार्थ और समस्त ब्रह्माण्ड जिस सबसे उत्कृष्ट और सर्व–व्यापक प्रभु में निवास करते हैं जो उसे नहीं जानता वह वेद मन्त्रों से क्या करेगा? जो उसे जान लेते हैं, वे आनन्दमय ब्रह्म में स्थित हो जाते हैं।

केवल ऋचाओं का या दर्शनों और वास्तु–विज्ञान का ज्ञान अपरा विद्या के अन्तर्गत है, परा विद्या वह है जिससे मनुष्य आत्मा और परमात्मा को जान लेता है।

यही अभिप्राय कठोपनिषद् में प्रकारांतर से कहा गया है।

नायमात्मा प्रवचनेन लम्यो न मेधया न बहुनाश्रुतेन।

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः तस्यैष आत्मा वृणुते तनूंस्वाम्।।

यह आत्मा न उपदेश सुनने से प्राप्त होता है, न बुद्धि या शास्त्रों से। जिसके सम्मुख यह स्वयं प्रकट हो जाता है, उसी को प्राप्त हो जाता है। शास्त्रों का अध्ययन मनुष्य को कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान करा सकता है। उसकी आत्मा को परिष्कृत करा सकता है, परन्तु केवल उतने से अनन्त सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। अनन्त सुख की प्राप्ति के लिये आवश्यक है कि मनुष्य अपने अन्तरात्मा और परमात्मा को पहचाने। ऐसे आत्मज्ञानी पुरुष को परमात्मा स्वयं वर लेता है– उसके सामने असली रूप में प्रकट हो जाता है।

यही अभिप्राय भगवद्गीता में समझाया गया है–

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।।

हे अर्जुन ! वेद त्रैगुण्यविषयक हैं। तू निस्त्रैगुण्य हो जा। निर्द्वन्द्व, नित्य सत्व में स्थित, त्यागी और आत्मज्ञानी बन जा।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।
तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।।

मध्यकालीन भक्त लोग अपनी असंस्कृत भाषा में भी इसी भाव को प्रकट करते रहे हैं। शास्त्रों का केवल अध्ययन अपरा विद्या तक पहुँचाता है– परा विद्या उससे आगे है।

वेदों में विमान विज्ञान

—सूर्य देव चौधरी

भारतीय जन विमान शब्द से अतीत में भी अपरिचित नहीं रहे हैं। आधुनिक काल में उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जब आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर विमान बनाने की अधिकारिक घोषणा की, तो पाश्चात्य जगत् ने उनकी बातों की खिल्ली उड़ाते हुए कहा कि यह साधु पागल है, जो लोहे आदि से निर्मित वस्तु को आकाश में उड़ाने की बात कर रहा है। लेकिन महर्षि की बातें सत्य थीं। जो पाश्चात्य जगत् उनकी बातों की खिल्ली उड़ा रहा था, उसी पाश्चात्य जगत् के दो वैज्ञानिक राइट बंधुओं ने बीसवीं सदी के आरम्भ में १७ दिसम्बर १९०३ ई० को आकाश में सर्वप्रथम विमान उड़ाकर वेदज्ञ ऋषि दयानन्द के कथन को सत्य प्रमाणित कर दिया। तब से अब तक लगभग सौ वर्षों में विमान के तकनीक में काफी विकास एवं परिवर्त्तन हुआ है। छोटे से छोटे तथा बड़े से बड़े विमानों की रचना सभी उत्तम सुविधाओं के साथ हुई है। यह विश्व के लिए महान् आश्चर्य है कि मनुष्य पृथिवी की भांति आकाश में भी सभी सुविधाओं के साथ विचरण कर रहा है। लेकिन इस विमान के ज्ञान का स्रोत भी वेद ही हैं, जैसा कि ऊपर में महर्षि दयानन्द के कथनों से स्पष्ट है। इस तथ्य को 'यंत्र सर्वस्वम्' के रचयिता महर्षि भारद्वाज ने भी स्वीकार किया है। इस पुस्तक के वैमानिकी प्रकरण को वर्त्तमान समय में आर्य समाज की सार्वदेशिक सभा ने 'बृहद् विमान शास्त्र' के नाम से प्रकाशित करवाया है, जिसके सम्पादक स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक हैं। महर्षि भारद्वाज का कथन है–

निर्मथ्य तद् वेदाम्बुधिं भरद्वाजों महामुनि।
नवनीतं समुद्धृत्य यंत्र सर्वस्व रूपकम्।।
सूत्रैः पंचशतैर्युक्तं व्योमयान प्रधानकम्।
वैमानिकी प्रकरणमुक्तं भगवता स्फुटम्।। (पृ० २–३)

अर्थात् भारद्वाज ऋषि कहते हैं कि वेद रूपी समुद्र का मंथन करके उसमें से यंत्र सर्वस्व ग्रंथ रूपी जो नवनीत मक्खन निकला उसी के आधार पर आठ अध्यायों में विभाजित सौ अधिकरणों वाला पाँच सौ सूक्तों से युक्त यह वैमानिकी प्रकरण कहा गया है।

इससे स्पष्ट हैं कि विमान विज्ञान के आधार वेद हैं। वेदों में विमान शब्द अनेक स्थानों पर आया है लेकिन वहाँ पर इसका अर्थ आकाश में चलने वाला विमान या वायुयान नहीं है। वेदों में आगत विमान शब्द अन्य अर्थ में हैं। अर्थात वायुयान के अर्थ में विमान शब्द का प्रयोग वेदों में नहीं है। वेदों में आए रथ या नाव शब्द ही वायुयान के बोधक हैं जो कि मंत्र में आए उसके कार्य एवं विशेषताओं से स्पष्ट होते हैं। नाव शब्द दो शब्दों न एवं व से बना है। जिसका अर्थ है नीचे नहीं अर्थात् जो नीचे नहीं बल्कि वायु या जल के ऊपर ऊपर चलें इसलिए वायुयान एवं जलयान दोनों के अर्थ में नाव शब्द प्रयुक्त हुआ है।

वायुयान एवं जलयान का ज्ञान वैदिक ऋषियों को था इसके प्रमाण में निम्न मंत्र देखें–

वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम् । वेदनाव समुद्रियः।। ऋ०(१/२५/७)

महर्षि दयानन्द ने इसका अर्थ करते हुए लिखा है कि जो समुद्र अर्थात अन्तरिक्ष वा जलमय प्रसिद्ध समुद्र में अपने पुरुषार्थ से युक्त विद्वान् (वैज्ञानिक) मनुष्य आकाश मार्ग से आने–जाने वाले विमान सब लोक वा पक्षियों के और समुद्र में जानेंवाली नौकाओं के रचना, चालन, ज्ञान और मार्ग को जानता है वह शिल्प विद्या (तकनीकी ज्ञान) की सिद्धि करने को समर्थ हो सकता है अन्य नहीं।

जिस प्रकार पृथिवी पर यानों के चलने के लिए अनेक मार्ग होते हैं उसी प्रकार आकाश में भी विमानो के चलने के लिए अनेक मार्ग हैं। अथर्ववेद में देवयान शब्द से इसका वर्णन किया गया है।

ये पंथानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।
ते मा जुषतां पयसा घृतेन यथाक्रीत्वा धनमाहराणि।। (अथर्व ३.१५.२)

अर्थात द्यावापृथिवी के बीच बहुत से देवयान मार्ग हैं जिसमें विमानों के द्वारा घी दूध आदि उत्तमोत्तम पदार्थ के व्यापार से व्यापारीगण धन–लाभ करें।

वेदों में स्थान स्थान पर अन्तरिक्ष यात्रा का वर्णन है। ऋग्वेद में ऐसे मंत्रों की बहुतायत है। ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में अन्तरिक्ष एवं समुद्र में चलनेवाले रथों अथवा नौकाओं का उल्लेख किया गया है। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि वेदों में वायुयान के अर्थ में विमान शब्द नहीं आया है बल्कि रथ एवं नौका शब्द ही वायुयान या जलयान का बोध कराते हैं। ऋग्वेद के एक मंत्र में एक ऐसे विमान का वर्णन है। जिसमें तीन बंधन (त्रिबन्धुर) तीन वृत्त (त्रिवृता) और तीन चक्र (त्रिचक्रा) हैं –

त्रिबन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक्। (ऋ० १/११८/२)

अर्थात् तीन बन्धन, तीन वृत एवं तीन चक्र से निर्मित सुसज्जित विमान से नीचे अर्थात् भूमि पर आवें। मंत्र में आए हुए त्रिबन्धुर, त्रिवृत और त्रिचक्र की सही व्याख्या तो विमान विशेषज्ञ ही बता सकते हैं लेकिन इतना स्पष्ट है कि मंत्र में किसी विमान का वर्णन है।

ऋग्वेद के एक अन्य मंत्र में अनेक विशेषताओं से युक्त एक विमान (दैवी नाव) का वर्णन है–

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।। (ऋ० १०/६३/१०)

अर्थात् अच्छे रक्षा साधनों से युक्त (सुत्रामाणं), विस्तारयुक्त अथवा विशाल, प्रकाशयुक्त, दोषों से रहित, घर के समान सुख–सुविधा से युक्त (सुशर्माणम्), अखंडित सुदृढ़ता से निर्मित (जतवदहसल इनपसज), जल या वायु को काटने के लिए सुन्दर यंत्रों से युक्त (स्वरित्राम्), छिद्ररहित (स्मां च्तववा) दिव्य विमान (दैवीं नावम्) पर हम लोग कल्याण के लिए आरुढ़ हों, चढ़ें।

वेदों में न केवल पृथिवी पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए विमान के प्रयोग की बात कही गई है, बल्कि पृथिवी से चन्द्रमा जैसे अन्य लोकों पर भी जाने के लिये रथ या विमान का प्रयोग का वर्णन है। ऐसे ही एक मधुवाहन रथ का वर्णन ऋग्वेद में है, जो पृथिवी से तीन दिन और तीन रात्रि में चन्द्रमा की यात्रा कर सकता है–

त्रयपवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्वे इत् विदुः।
त्रयः स्कम्भास स्कभितासः आरभे त्रिनक्तं याथस्त्रिवश्विना दिवा।। (ऋ० १/३४/२)

अश्विनी कुमारों के द्वारा या अश्विनीशक्तियों से साथ निर्मित सुखपूर्वक ले जाने वाले यान में (मधुवाहने रथे), तीन वज्रतुल्य कलाचक्र यानी इंजन (त्रय पवयः) हो तथा वह तीन स्तम्भों से स्तम्भित हो (त्रयः स्कम्भासः)। ऐसे विमान को चन्द्रमा की यात्रा की ओर (सोमस्य वेनामनु), आरम्भ करने के क्रम में (आरमे), सभी लोग यह निश्चित रूप से जानें (विश्वे इत् विदुः), कि तीन दिन एवं तीन रात्रि में ले जाया जा सकता है (त्रि नक्तं उ त्रि दिवा याथः)। इस विमान की विशेषताओं को ध्यान में रखकर यदि इसकी तुलना आज के सन्दर्भ में की जाय, तो वह रॉकेट होगा।

वेदों में न केवल मनुष्यों के गमना गमन के लिए विमान की चर्चा आई है, बल्कि भोज्य पदार्थों को पृथ्वी के एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने के लिए भी बड़े–बड़े यानों, विमानों एवं जलयानों का वर्णन है। ऋग्वेद के दो मंत्रों में ऐसे ही जलयान एवं वायुयान का वर्णन है–

तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेधे रयिं न कश्चिन्मगृवान् आवाहाः।
तमूहथुः नौभिरात्मवन्तीभिः अन्तरिक्षप्रुदृभिः आपोदकाभिः।।
तिस्त्रः क्षपः त्रिः अहः अतिव्रजद्भिः नासत्या भुज्युमूहथुः पतंगैः।
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभिः रथैः शतपद्भिः षडश्वैः।। (ऋ० १/११६/३–४)

पहले मन्त्र का अर्थ यह है कि भोज्य पदार्थों से भरा हुआ मालवाहक जहाज समुद्री तूफानों में फंसकर डूबते हुए भोज्य पदार्थों के व्यापारी को मरते हुए धन को छोड़ते हुए की भांति जब छोड़ देता है, तब उस व्यापारी को अश्वि शक्तियों से युक्त विमान आकाश मार्ग से उसे पार पहुँचाता है, किनारे पर ले जाता है। 'आत्मवन्तीभिः' शब्द संकेत करता है कि वह विमान स्वचालित यंत्रों एवं कुशल चालक से युक्त हैं। 'अन्तरिक्ष प्रुद्भिः' शब्द का अर्थ आकाश में उड़ने वाला है, जो विमान के लिए आया है 'अपोदकाभिः' शब्द यह सूचित करता है कि उस पर जल का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात् वह Water proof है।

दूसरे मंत्र में वर्णित यान भी भोज्य पदार्थों को पहुँचाने वाला कोई तीव्रगामी बड़ा जलयान या विमान है, जो तीन दिन एवं तीन रात्रि में आ जा सकता है। इस यान की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं। 'शतपद्भिः' शब्द यह सूचित करता है कि चलने के साधन के रूप में इसमें सौ अथवा अनेक पहिए हैं। 'षडश्वैः' शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह शब्द संकेत करता है कि इस यान में छह इंजन है, क्योंकि कोई भी यान, विमान या जलयान इंजन से ही गति प्राप्त करता है और शीघ्र गति करने वाला ही अश्व कहा जाता है– 'आशु गच्छति इति अश्वः'। म० दयानन्द ने मंत्रांश 'समुद्रस्य धन्वन्नद्रिस्य पारे त्रीभिः रथैः' का अर्थ 'जलपूर्ण समुद्र तथा स्थल एवं अन्तरिक्ष के पार इन तीन प्रकार के वाहनों से' किया है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि यह त्रिपुर विमान हो, जिसका वर्णन भारद्वाज ऋषि ने अपने ग्रंथ 'यंत्रसर्वस्म्' के वैमानिकी प्रकरण में किया है। यानी छह इंजन, अनेक पहिए से मुक्त इन तीनों स्थानों में अत्यन्त वेग से चलने वाले विमान से व्यापारी को समुद्र तूफान से निकालकर तीन दिन एवं तीन रात्रि में आकाश मार्ग से किनारे पर लाया गया।

ऋग्वेद में मरुत देवतावाले भरद्वाज ऋषि द्वारा दृष्ट एक सूक्त में एक विशिष्ट विमान का एक ऐसा सजीव वर्णन है, जिसे आधुनिक विमान तकनीक से किसी भी दृष्टि से कम नहीं कहा जा सकता है–

अनेनो वा मरुतो यामो अस्तु अनश्वचिद् यमजत्यरथीः।
अनवसो अनभीशू रजस्तूः वि रोदसी पथ्या याति साधन्।। (ऋ० ६/६६/७)

मंत्र का अवलोकन करने से विमान की अनेक विशेषताओं का पता चलता है। वह विमान निर्दोष या निर्बाध गतिवाला है (अनेनः), अश्व रहित है (अनश्वः), उसमें सारथी यानी चालक नहीं है (अरथीः), वह बिना अन्न यानी कोयला, पेट्रोल आदि से रहित है (अनवसः), लगाम रहित है (अनभीशूः), जो अणु शक्ति यानी आणविक इंधन से चलता है (रजस्तूः)। ऐसा यान निश्चय के साथ आकाश एवं पृथ्वी पर (रोदसी), चलता है (अजति)। वह मार्गों को साधता हुआ (पथ्या साधन्), विशिष्ट गति से आता जाता है (वि याति)। मंत्र में 'अरथीः' शब्द से ऐसा प्रतीत होता है कि यह युद्धक विमान है, जो चालक रहित है और अपने दूर नियन्त्रण केन्द्र से ही यह संचालित एवं नियंत्रित होता है। 'अनश्वः' शब्द बतलाता है कि इस यान में घोड़े नहीं है अर्थात् यह यांत्रिक है।

ऋग्वेद के एक मंत्र में संचार साधनों तथा शस्त्रास्त्रों से युक्त विद्युत से चलने वाले रथ (विमान) का वर्णन है–

आ विद्युन्मद्भिः मरुतः स्वर्कैः रथोभिर्यात ऋष्टिमद्भिः अश्वपर्णैः।
आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न पप्तत सुमायाः।। (ऋ० १/८८/१)

मंत्र का अर्थ यह है कि उत्तम बुद्धिवाले सेनाध्यक्ष तथा श्रेष्ठ विचार वाले विद्वान् तार विद्या यानी संचार साधनों तथा शस्त्रास्त्रों के साथ (ऋष्टिमद्भिः), उस विमान (रथेभिः) आदि यान से पक्षियों की भांति उड़कर जाएँ और आएँ (वयः न पप्तत्), जिसमें शीघ्र ले जाने वाली गति देने के लिए विशाल पंखे (अश्वपर्णैः) लगे हों और जो बिजली से चलता है (विद्युन्मद्भिः)। इसी तरह ऋग्वेद (३/१४/१) में भी 'विद्युद्रथः' शब्द आया है, जिससे पता चलता है कि वैदिक काल में विमान बिजली से चलते थे। इन मंत्रों में 'विद्युन्मद्भिः' तथा 'विद्युद्रथः' शब्दों से उन वेदानभिज्ञ लोगों की अनभिज्ञता तथा पूर्वाग्रही लोगों का पूर्वाग्रह दूर हो जाना चाहिए जो वेदों में आए रथ शब्द को घोड़ागाड़ी का पर्याय समझते हैं।

ऋभु देवतावाले ऋग्वेद के एक मंत्र में ऐसे रथ का वर्णन है, जो लोक समूह के चारों ओर घूमता है–

अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो रथस्त्रिचक्रःपरि वर्त्तते रजः।
महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभवः यच्च पुष्यथ।। (ऋ० ४/३६/१)

इस मंत्र में कहा गया है कि हे शिल्पी जनों। आप लोगों के लिए घोड़ों से रहित लगाम रहित, अत्यन्त प्रशंसित, तीन चक्रवाला विमान बना है, जो बड़े लोक समूह के चारों ओर घूमता है। उसके दिव्य कर्म के उपदेश (ज्ञान) से अन्तरिक्ष एवं पृथिवी को पुष्ट करो। इस मंत्र पर वैज्ञानिक चिन्तन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि मंत्र में किसी 'कृत्रिम उपग्रह का संकेत है क्योंकि मंत्र में कहा गया है कि वह रथ लोक समूह के चारों ओर घूमता है और उसके दिव्य कर्म से उत्पन्न ज्ञान से अन्तरिक्ष एवं पृथिवी को पुष्ट करो। कृत्रिम उपग्रह में भी यही होता है। यह पृथ्वी आदि लोक के चारों ओर घूमता है और इसके द्वारा एकत्रित ज्ञान से वैज्ञानिक गण पृथ्वी आदि की समृद्धि के लिए कार्य करते हैं।

विमान के बारे में उपरोक्त मंत्र केवल दिग्दर्शन मात्र हैं। वेदों के अन्य सूक्तों एवं मंत्रों में यान, विमान एवं जलयान का वर्णन है, जो विद्युत, वाष्प, तैल आदि शीघ्रगामी शक्तियों से चलते हैं। इस बारे में विशेष शोध की आवश्यकता है। इन्द्र, अग्नि, सूर्य मरुत, अश्विनौ, ऋभु, विश्वेदेवा आदि देवतावाले तथा मित्रावरुण जैसे युगल देवता वाले सूक्तों पर विशेष चिन्तन करने से यांत्रिक विज्ञान के कुछ ऐसे तथ्यों का पता लग सकता है, जो आज भी लोगों को आश्चर्यचकित कर दे, क्योंकि वेद सर्वज्ञान मय हैं– 'सर्वज्ञान मयो हि वेदाः'।

इन तथ्यों के आलोक में ही १९८८ में भारत में सम्पन्न एक विश्व अन्तरिक्ष सम्मेलन में इटली के वैज्ञानिक डॉ० रॉबर्ट पिनौती ने भारद्वाज ऋषि कृत विमान का मॉडल प्रस्तुत करते हुए भारत को विमान–विज्ञान का जनक कहा था।

—झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
स्वामी श्रद्धानन्द पथ रांची-१

दक्षिण अफ्रीका से पधारे श्री राजीव पातनदीन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरण पातनदीन के साथ पधारे

आठ सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल से हुआ विशेष विचार–विमर्श

स्वामी आर्यवेश जी ने ओ३म् पट्ट तथा अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश भेंटकर किया सम्मानित

गत् 7 जून, 2024 को दिल्ली स्थित लीला होटल में दक्षिण अफ्रीका से पधारे आठ सदस्यी प्रतिनिधि मण्डल से स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष विचार–विमर्श किया। ज्ञातव्य है कि यह प्रतिनिधि मण्डल अपने अन्य आवश्यक कार्यों से दिल्ली आया हुआ था। उसी दौरान प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य श्री राजीव पातनदीन तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरण पातनदीन ने स्वामी आर्यवेश जी से सम्पर्क करके प्रतिनिधि मण्डल के साथ बैठक करने का आग्रह किया। स्वामी आर्यवेश जी ने होटल जाकर सभी सदस्यों को ओ३म् पट्ट पहनाकर सम्मानित किया तथा उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भी भेंट किया। विचार–विमर्श के दौरान निश्चय हुआ कि दिसम्बर माह में डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा जिसमें आर्य समाज के वैश्विक दृष्टिकोण पर विशेष व्याख्यान कराये जायेंगे और उसी दौरान आर्यन बेनेवेलेन्ट होम में नव–निर्मित सभागार का लोकार्पण भी स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से किया जायेगा। बैठक में स्वामी जी के साथ सदस्यों ने अपनी कई शंकाएं भी रखी जिनका स्वामी जी ने समाधान किया।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में आर्य युवा निर्माण शिविर का

भव्य आयोजन दिनांक 16 जून, 2024 को उत्साह के साथ हुआ सम्पन्न

वयोवृद्ध आर्यनेता श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी ने की अध्यक्षता

यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी रहे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि

श्री सत्यवीर चौधरी जी ने किया कुशल मंच संचालन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद के तत्वावधान में सात दिवसीय आर्य युवा निर्माण शिविर का शान्दार आयोजन किया गया जिसमें लगभग 150 युवकों ने भाग लिया। शिविर का समापन 16 जून, 2024 को कुसुम गोयल डॉ. संतोष, सरस्वती विद्या मंदिर राजनगर, गाजियाबाद में सम्पन्न हुआ। शिविर की पूरी व्यवस्था जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा ने की और प्रशिक्षण का दायित्व श्री धर्मवीर आर्य अध्यक्ष, राष्ट्रीय आर्य वीरदल ने संभाला। शिविर में विभिन्न गांव एवं शहरों से लगभग 150 नवयुवकों ने भाग लिया जिन्हें दण्ड–बैठक, आसन, प्रणायाम, लाठी, जूडो, कर्राटे, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, पी टी एवं स्तूप आदि का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। जिसका प्रदर्शन समापन समारोह में हजारों लोगों की उपस्थिति में किया गया। प्रदर्शन को देखकर सभी श्रोता एवं दर्शक आश्चर्य चकित हुए कि इतने थोड़े समय में यह सब कुछ युवकों ने कैसे सीखा।

इस अवसर पर युवा विदुषी ओजस्वी वक्ता आयुषी राणा का जोशीला भाषण हुआ और उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि धर्म के नाम पर फैलाये जा रहे पाखण्ड एवं अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध कार्य करने का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि आज हमारी वैदिक मान्यताओं को सबसे अधिक चुनौती हिन्दू समाज की रूढ़ियाँ एवं अन्धविश्वास से ओत–प्रोत मानसिकता है। सत्य सनातन वैदिक धर्म ही सही अर्थों में सनातन है, क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से महाभारत पर्यन्त वैदिक मान्यताओं एवं धर्म के मूल्यों का प्रभाव पूरे विश्व में रहा है। कालान्तर में अन्य मत एवं सम्प्रदायों का जन्म हुआ और उनके साथ–साथ लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व सम्पूर्ण हिन्दू समाज में मूर्ति पूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, तन्त्र–मन्त्र, झाड़–फूंक एवं विविध सामाजिक कुरीतियाँ पनपने लगीं। वर्तमान समय में भी योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे महान योगी के सम्बन्ध में रचाई जा रही रास लीलाएं एवं अनेक विकृत धारणाएँ समाज में व्याप्त हैं। वर्तमान समय की सभी कुरीतियाँ प्राचीनकाल की स्वस्थ परम्पराओं का विकृत रूप है। इन सभी को समाप्त करना आवश्यक है।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओं को प्रेरित किया कि वे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द तथा अन्य अनेक महापुरुषों की जीवन एवं शिक्षाओं को व्यवहार में लायें। महापुरुषों को ईश्वर का अवतार मानकर उनकी मूर्तियाँ पर चढ़ावा चढ़ाने का काम पूजा नहीं है, बल्कि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आचरण में लाना ही उनकी पूजा है। पूजा का मतलब सम्मान एवं सत्कार होता है। स्वामी आर्यवेश जी ने पूरे समाज से अपील की कि वे बच्चों को संस्कार देना प्रारम्भ करें। बचपन से ही बच्चों को सही शिक्षा एवं संस्कार दिया जाये तो वे अपने जीवन में सदाचारी, धर्मात्मा, परोपकारी एवं सही अर्थों में मानव बन सकते हैं। आज संस्कारों की कमी के कारण युवा वर्ग भटक रहा है। उसे सही मार्ग नहीं मिल रहा। स्वामी जी ने शिविरों के माध्यम से युवाओं के निर्माण के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए जिला सभा की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आर्य केन्द्रीय सभा एवं जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद अत्यन्त सक्रिय सभाएं हैं। श्री सत्यवीर चौधरी व उनके साथी निरन्तर कोई न कोई कार्यक्रम गाजियाबाद में करते रहते हैं जिससे समाज में विशेष जागृति पैदा होती है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी ने अपने उद्बोधन में शिविरार्थी युवाओं को आशीर्वाद दिया और कहा कि इस आयु में लिया गया प्रशिक्षण आपके जीवन की नींव बनेगा। श्री शर्मा जी ने जिला सभा के सभी पदाधिकारियों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के अन्त में जिला सभा के मंत्री श्री सत्यवीर चौधरी ने सभी अतिथियों एवं आगन्तुक महानुभावों तथा सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस शिविर की व्यवस्था में श्री नरेन्द्र कुमार पांचाल, संयोजक शिविर की विशेष भूमिका रही। उनके अतिरिक्त सभा के प्रधान श्री नरेन्द्र बंसल, कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण शास्त्री, शिविर प्रभावी श्री कृष्णदेव आर्य, सह संयोजक श्री गौरव सिंह आर्य एवं आर्य वीरदल के संचालक श्री ओमेन्द्र आर्य ने भी शिविर व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त श्री ओम प्रकाश आर्य, स्वागताध्यक्ष, श्री बृजमोहन सिंघल, श्री प्रवीण चौधरी, डॉ. वीरेन्द्र नाथ सरदाना प्रधान आर्य समाज राजनगर, श्री कृष्ण कुमार यादव मंत्री आर्य समाज वृन्दावन गार्डेन, डॉ. पंकज कुमार प्रधानाचार्य सरस्वती विद्यामंदिर राजनगर, श्री विश्वबन्धु आर्य मंत्री आर्य समाज गोविन्दपुरी, मोदीनगर, डॉ. आर.के. आर्य स्वदेशी फार्मेसी एवं समाजसेवी, श्री प्रमोद चौधरी, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, आचार्य दिवाकर, पं. राम निवास आर्य आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम बेहद प्रभावशाली एवं उत्साहवर्द्धक रहा। अन्त में ऋषि लंगर में सभी उपस्थित महानुभावों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

माता विद्यावती गुप्ता जी का 97 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन

गत् दिनों श्रीमती विद्यावती गुप्ता धर्मपत्नी स्व. श्री राम आसरे गुप्ता जी (भैंसौली वाले), कानपुर, उत्तर प्रदेश का दिनांक 24 जून, 2024 को 97 वर्ष की आयु में निधन हो गया। पूज्या माता जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। माता जी की स्मृति में दिनांक 6 जुलाई, 2024 को महाराजा अग्रसेन भवन 291, के–ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर (उत्तर प्रदेश) में शांति यज्ञ तथा श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम रखा गया है। माता जी आर्य समाज के विचारों से ओत–प्रोत रहीं। उन्होंने अपने जीवन में आर्य संस्कारों को धारण करते हुए अपने परिवार का पालन–पोषण किया। उन्होंने अपने बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के विचारों से अवगत कराते हुए संस्कारित किया। उन्होंने अपने चारों सुपुत्रों श्री राम प्रकाश गुप्ता, श्री अतुल प्रकाश गुप्ता, श्री रवीश प्रकाश गुप्ता तथा श्री हरीश प्रकाश गुप्ता को उच्च शिक्षित तथा संस्कारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती रहीं तथा पति के जाने के बाद भी अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए परिवार को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती रहीं। ऐसी विद्वान् माता जी के अचानक चले जाने से परिवार में जो रिक्तता आई उसे भर पाना असम्भव है। परन्तु ईश्वर द्वारा लिये गये निर्णय को न चाहते हुए भी सहन करना पड़ता है। माता जी के निधन पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

ग्राम भण्डारी शेरा, जिला–बागेश्वर, उत्तराखण्ड में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित हुआ भव्य कार्यक्रम

स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी का स्थानीय जनता ने किया जोरदार स्वागत

श्री गोविन्द सिंह भण्डारी ने किया कार्यक्रम का संयोजन

चितन्न शिविर समाप्त होने के पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने प्रमुख साथियों के साथ 29 जून, 2024 को मध्यान्ह बागेश्वर पहुंचे जहाँ सीनियर सिटिजन्स संगठन की ओर से श्री दिलीप सिंह ने उनका फूल–मालाओं तथा फलों से स्वागत किया। बागेश्वर में स्वामी आर्यवेश जी, महात्मा देवमुनि के निवास पर उनके परिवारजनों से मिलने के लिए गये। गत् वर्ष महात्मा देवमुनि का देहावसान हो गया था। इसलिए स्वामी आर्यवेश जी परिवारजनों को ढांढस बंधाने के लिए उनके निवास पर पहुंचे थे। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि महात्मा देवमुनि जी को 2009 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी समारोह के अवसर पर रामलीला मैदान, नई दिल्ली में आयोजित विशाल समारोह में वानप्रस्थ की दीक्षा दी थी। पूर्व में महात्मा देवमुनि जी सेना में सेवा कर चुके थे और सेवानिवृत होने के उपरान्त उन्होंने अपना पूरा समय आर्य समाज की गतिविधियों के लिए समर्पित कर दिया था। स्वामी आर्यवेश जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं वानप्रस्थी श्री श्यामलाल से भी मिलने के लिए गये। स्वामी जी से मिलकर श्री श्यामलाल जी भावविभोर हो गये और कहने लगे कि मेरा सौभाग्य है कि आप आज पहाड़ों की इतनी लम्बी यात्रा करके मेरा उत्साहवर्द्धन करने के लिए पधारे हैं, यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता है और उदारता भी है। उन्होंने कहा कि आपके आने से मुझे आज विशेष ऊर्जा प्राप्त हुई है और जब तक शरीर में एक भी श्वांस चलेगा तब तक मैं महर्षि दयानन्द जी के कार्य करता रहूंगा। स्वामी जी ने नरेन्द्र पैलेस होटल के मालिक श्री नरेन्द्र जी को मिलकर अपनी शुभकामनाएं एवं अपना आशीर्वाद प्रदान किया। विदित हो कि इस होटल का शिलान्यास विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने किया। बागेश्वर से श्री गोविन्द सिंह भण्डारी के नेतृत्व में सभी लोग भण्डारी जी के पैतृक गांव भण्डारी शेरा पहुंचे, जहाँ विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था। भण्डारी शेरा में श्री गोविन्द सिंह भण्डारी व आर्य समाज के प्रधान सूबेदार प्रयाग सिंह तथा उनके साथियों ने भव्य महर्षि दयानन्द भवन का निर्माण किया हुआ है। जिसका रख–रखाव एवं व्यवस्था अत्यन्त प्रशंसनीय है। आर्य समाज भण्डारी शेरा के प्रधान श्री प्रयाग सिंह जी व उनके अन्य साथी श्री सुरेन्द्र सिंह भण्डारी, श्री अशोक कुमार एडवोकेट आदि के प्रयास से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में यहाँ शानदार कार्यक्रम आयोजित किया हुआ था जिसमें श्री हरिराम शास्त्री ने प्रातःकाल यज्ञ सम्पन्न कराया और उसके पश्चात् लगभग 11 बजे विधिवत रूप से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस आयोजन की अध्यक्षता 97 वर्षीय मास्टर शेर सिंह धपोला ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में 94 वर्षीय श्री सोहन सिंह रावत व 89 वर्षीय श्री रूप सिंह के अतिरिक्त श्री आलम मेहरा कांडा, स्वामी सर्वेश्वर गिरि जी महाराज, श्री हेमन्त कांडा एवं कांडा ब्लॉक स्थापना संघर्ष समिति के समस्त पदाधिकारी एवं प्रमुख सदस्य उपस्थित थे। भण्डारी शेरा के अतिरिक्त धपोला शेरा, टिटौली कांडा, बागेश्वर, हल्द्वानी एवं अन्य स्थानों से महत्त्वपूर्ण लोग कार्यक्रम में पधारे हुए थे।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी सर्वेश्वर गिरि जी महाराज, श्री रूप सिंह जी, श्री सोहन सिंह रावत, मास्टर शेर सिंह धपोला व सूबेदार प्रयाग सिंह ने अपने विचार प्रस्तुत किये। सूबेदार प्रयाग सिंह ने सभी आगन्तुक महानुभावों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन संघर्ष समिति के अध्यक्ष एवं जाने–माने नेता श्री गोविन्द सिंह भण्डारी ने किया। उन्होंने सभी

अतिथियों का अंगवस्त्र एवं स्मारिका भेंटकर स्वागत किया। साथ ही महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भी सभी को भेंट किये गये। श्री भण्डारी जी ने अपने व्याख्यान में बताया कि इस पहाड़ों के बीच हमारे इस छोटे से गांव में बने महर्षि दयानन्द भवन का लोकार्पण 2013 में स्वामी आर्यवेश जी महाराज के कर–कमलों से हुआ था। वर्तमान में यहाँ की सारी व्यवस्था का दायित्व सूबेदार प्रयाग सिंह एवं उनकी टीम को सौंपा हुआ है। भण्डारी जी ने स्वामी आर्यवेश जी से आग्रह किया कि कांडा को ब्लॉक बनवाने के लिए हम लम्बे समय से संघर्ष कर रहे हैं। अतः हमें आपके माध्यम से आर्य समाज का समर्थन चाहिए। ताकि शीघ्रातिशीघ्र हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के व्यक्तित्व पर और देश की आजादी एवं नव–निर्माण में आर्य समाज की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला वहीं उन्होंने घोषणा कि कांडा ब्लॉक स्थापना के संघर्ष में

सितारगंज जेल के अधीक्षक श्री अनुराग मलिक जी स्वामी आर्यवेश जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

आर्य समाज पूरी ताकत के साथ सहयोग करेगा। स्वामी जी ने सरकार को चेतावनी दी कि शीघ्रातिशीघ्र कांडा को ब्लॉक घोषित किया जाये अन्यथा इस आन्दोलन के दूरगामी परिणाम झेलने पड़ेंगे। स्वामी जी के इस आश्वासन एवं घोषणा से संघर्ष समिति के सदस्यों एवं अधिकारियों में एक नया जोश एवं उत्साह पैदा हो गया। उन्होंने कतरल ध्वनि एवं महर्षि दयानन्द जी के जय के नारों से पूरे हॉल को गुंजा दिया। स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यान के बाद सभी उपस्थित स्त्री–पुरुषों के लिए ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई थी जिसमें सैकड़ों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी व उनके सभी साथी आदरणीय श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी के साथ चौकोड़ी (पिथौरागढ़) पहुंचे, जहां श्री प्रकाश कार्की के शानदार स्कूल के प्रांगण में उनका जोरदार स्वागत किया गया। श्री कार्की जी वर्षों से आर्य समाज के संगठन से जुड़े हुए हैं और सदैव उनका सहयोग मिलता रहता है। उन्होंने रात्रि निवास के लिए अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था की थी। चौकोड़ी से शाम को हिमालय दर्शन भी किया और विभिन्न ऊँची चोटियां देखने को मिली। 30 जून, 2024 को प्रातः 5 बजे चौकोड़ी से प्रस्थान कर स्वामी आर्यवेश जी का काफिला दोपहर एक बजे खुली जेल सितारगंज (उत्तराखण्ड) पहुंचा, जहां पर जेल के अधीक्षक श्री अनुराग मलिक ने उनका स्वागत किया। भोजन आदि के उपरान्त अधीक्षक महोदय ने जेल का भ्रमण भी कराया और जेल में किये गये सभी विशेष कार्य एवं व्यवस्था देखकर स्वामी जी एवं उनके सभी साथी अत्यन्त प्रभावित हुए। स्वामी जी का कुछ देर के लिए कैदियों के बीच आध्यात्मिक प्रवचन भी कराया गया जिससे सभी कैदियों को विशेष प्रेरणा मिली। जेल अधीक्षक श्री अनुराग मलिक ने जेल में चलाए जा रहे कई ऐसे प्रकल्प दिखाये जिनसे कैदियों को कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वावलम्बी बनने की दिशा मिलेगी। जेल की पूरी व्यवस्था पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है किन्तु संक्षेप में इतना ही कह सकते हैं कि यह अनुभव अत्यन्त प्रेरणादायक रहा। यहाँ पर बेटी सुकीर्ति (धर्मपत्नी श्री अनुराग मलिक) को विशेष धन्यवाद देना आवश्यक है कि क्योंकि उन्होंने विशेष आग्रह करके स्वामी जी तथा उनके सभी साथियों को सितारगंज आने के लिए बाध्य किया। इसलिए वे विशेष धन्यवाद की पात्र हैं, उनका लाडला सुपुत्र अगसत्य भी स्वागत की प्रक्रिया में आगे रहा। स्वामी जी ने उसे विशेष आशीर्वाद प्रदान किया। श्री अनुराग मलिक अधीक्षक, सितारगंज जेल ने स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी को जेल के कैदियों द्वारा निर्मित लकड़ी के बहुत सुन्दर मोमेंटो प्रतीक रूप में भेंट किये, ताकि उनकी इस यात्रा की स्मृति बनी रहे। मलिक साहब का धन्यवाद करके सभी साथी गन्तव्य के लिए चल पड़े और रात्रि 11 बजे अपने–अपने स्थान पर सभी पहुंचे।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में मानवीय निर्माण मंच के तत्वावधान में योग शिक्षक रत्न सम्मान समारोह का भव्य कार्यक्रम दिनांक 16 जून, 2024 को फरीदाबाद में हुआ सम्पन्न

आर्य जगत के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य अतिथि

मानवीय निर्माण मंच के संरक्षक महाशय ईश्वर सिंह आर्य ने की अध्यक्षता

प्रसिद्ध कलाकार श्री राहुल भूचर रहे अतिविशिष्ट अतिथि

अन्तर्राष्ट्रीय के उपलक्ष्य में मानवीय निर्माण मंच के तत्वावधान में गत् 16 जून, 2024 को राजकीय महिला विद्यालय फरीदाबाद में योग शिक्षक रत्न सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी मुख्य अतिथि तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर नाट्य मंच के द्वारा शानदार प्रस्तुति देने वाले विख्यात कलाकर श्री राहुल भूचर अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता मंच के संरक्षक महाशय ईश्वर सिंह आर्य ने की। इस आयोजन में लगभग 14 प्रदेशों से पधारे अनुभवी योग शिक्षकों को योग शिक्षक रत्न के सम्मान से विभूषित किया गया। उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये। इस पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार मानवीय निर्माण मंच के अध्यक्ष डॉ. बलराम आर्य थे। कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी, श्री राहुल भूचर जी एवं महाशय ईश्वर सिंह आर्य ने अपने विचार प्रस्तुत किये और पधारे हुए योग शिक्षकों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने योग को मानव जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी बताया और इसे जीवन की दिनचर्या में शामिल करने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम में श्री महिपाल आर्य सरपंच, श्री उत्तम आर्य दिल्ली, श्री जगवीर आर्य, श्री श्याम आर्य आदि भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. बलराम आर्य ने आमंत्रित विशिष्ट अतिथियों एवं योग शिक्षकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सत्य की महिमा

—श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का एक प्रवचन

प्राचीनकाल में वेदों और उपनिषदों के ही पठन–पाठन का विधान था। आचार्य लोग शिष्यों को यही पढ़ाते थे। सार्वजनिक सभाओं में भी इन्हीं का उपदेश होता था। इनमें सत्य की बड़ी महिमा बताई है। सत्य की सदा विजय होती है और झूठ की पराजय। कुछ समय के लिए झूठ की विजय होती प्रतीत हो यह अलग बात है किन्तु अन्त में सत्य ही विजयी होता है। जिस देश में सत्य का प्रचार हो उसकी अवस्था अच्छी होती है। विचार कीजिए कि सत्य है क्या वस्तु। एक मनुष्य के सोचने में देर लगा देनी चाहिए किन्तु जो कहना हो उसे ठीक भली प्रकार विचार लेना चाहिए। आप कहें कि स्वामी जी भोजन हमारे घर करना। यदि मेरी इच्छा हो तो हां कर देनी चाहिए, यदि न हो तो न। सत्य से अभिप्राय है मन, वाणी और कर्म तीनों से सत्य। यह कोई कठिन कार्य नहीं है। महाराज रामचन्द्रजी का चरित्र पढ़ते हैं। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहते थे। रामायण उन की कीर्ति का गायक है। लोग उन्हें अवतार मानते हैं। किन्तु वेद–शास्त्र ऐसा नहीं कहते। आर्य समाज भी उन्हें अवतार नहीं मानता। राम में जहां अन्य बहुत से गुण थे वहां एक यह विशेष गुण था कि वे सत्य बोलते थे। कोई संस्था या व्यक्ति जब वह सत्य का प्रचार करता है और सत्य को अपनाता है तो उसका गौरव बढ़ता है। यह सब बातें विचार कर देखें कि उपनिषदों का तात्पर्य क्या हैं।

सत्य का एक और लक्षण भी है। वह यह कि जो सदा सर्वदा एक सा रहे, वह सत्य। जिसका न आदि न अन्त। जो समय–समय पर बदलता रहे वह अनृत होता है। परमात्मा आदि अन्त हीन है। सत्य की पूर्ति विद्या और ज्ञान के बिना नहीं हो सकती। आजकल सत्य का स्थान झूठ ने लिया है। झूठ बोलो और झूठ प्रमाणित न होने दो। न्यायालय में क्या क्या होता है–

गवाह साक्षी देता है। वादी–प्रतिवादी दो में से एक अवश्य झूठा होता है। न्यायाधीश उसी को सत्य मानेगा जिसके पक्ष में बहुत से गवाह हों। इसलिये सत्य भाषण मनुष्य का गौरव है। परमात्मा तीनों कालों में सत्य है। किन्तु प्रकृति नहीं। प्रकृति का नाश तो नहीं होता किन्तु यह बदलती रहती है। यह अपना रूप बदलती रहती है। सत्य परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ लक्षण है। प्रकृति में गुण परिवर्तन होता रहता है। इस प्रकार प्रकृति परिणामी है।

छोटा बालक निर्दोष होता है। वह झूठ नहीं बोलता। किन्तु जब युवावस्था में आता है तो वह बाल्यावस्था का परिणाम है फिर बुढ़ापा आता है इसलिये प्रकृति से काम लो, किन्तु यह अमर नहीं है। इसलिए वह सत्य भी नहीं है।

पन्द्रह सौ वर्ष हुए यहां चीनी यात्री आए। उन्होंने भारतवर्ष का इतिहास लिखा। उस समय वे जिस के घर जाते पानी मांगते पर दूध मिलता। भारतीय अतिथि का बहुत सत्कार करते थे। घर से बाहर जाने पर ताला लगाने की आवश्यकता नहीं होती थी। यदि वह मेगस्थनीज यात्री आज यहां आये तो कहेगा कि जिस भारत का मैंने इतिहास लिखा था वह कोई और ही भारतवर्ष रहा होगा यह तो नहीं हो सकता आज चोरों का बोलबाला है। स्टेशनों पर जेब काटने वालों से सावधान रहने के विज्ञापन लगे रहते हैं। मनु जी ने जिस समय के भारतवर्ष का वर्णन किया है उसकी आज एक भी अच्छी बात नहीं मिलती। जब कोई ईश्वर को छोड़ कर किसी अन्य की पूजा करता है तो धर्मच्युत हो जाता है।

क्या जीवात्मा सत्य है। हां सत्य है। परन्तु इसमें अध्यास आ जाता है। वह शरीर से विकल्पित होकर और शरीर के दुःख को अपना दुःख मानता है यदि मैं रस्सी को सांप समझ लूं तो क्या उसमें काटने की शक्ति आ जायेगी। किन्तु फिर भी मनुष्य रस्सी को सांप समझ कर डर जाता है। अध्यास में बुरा है इसलिए यह सत्य नहीं हो सकता। प्रकृति में परिणाम और जीवात्मा में अध्यास इसलिये दोनों ही सत्य नहीं।

ईश्वर के अतिरिक्त और किसी के आगे सिर झुकाना बुरा है। ईश्वर का ही पूजन और भजन करो। साथ–साथ सत्य भाषण का सभी अभ्यास करे। चाहे कोई धनी हो या निर्धन, स्त्री या पुरुष, सबका एक ही ईश्वर है। वह एकरस रहने वाला है भारतवासियों ने इसे भुला दिया।

जो भूल जाये उसको भटकना पड़ता है। एक सत्य को मान लो सारे झगड़े समाप्त हो जायेंगे।

ऋषि किसे कहते है? आजकल बी०ए०, एम०ए० आदि की डिग्रियां मिलती हैं। पूर्व काल में विद्वानों को ऋषि मुनि की पदवियां मिलती थीं। ऋषि वे होते थे जिन्होंने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया होता था। यदि कहीं दंगल हो रहा हो तो आप वहां बिना टिकट के नहीं जा सकेंगे। किन्तु यदि कोई पहलवान जाना चाहेगा तो उसे नहीं रोका जायेगा। कारण कि वह समान गुणशील वाला है। परमात्मा सत्य है इसके साथ उसका ही मेल हो सकता है जो सत्यपरायण सत्यमानी और सत्यकारी हो। सत्यमानी तो बहुत हो सकते हैं किन्तु सत्यकारी होना कठिन है। जब यह तीनों चीजें हो जायें तो ज्ञान की पूर्ति होती है। ऋषि वह जो वेदशास्त्रों का ज्ञाता हो। जो स्वयं सन्मार्ग पर चले और दूसरों को चलाये। मैं पूछता हूँ कि विद्वान् कौन है? आप कहेंगे, जो बहुत पढ़ा–लिखा हो। और रुपया कमाता हो, किन्तु ऐसे अनपढ़ मिल सकते हैं जो रुपया खूब कमाते हैं। इसलिये कहा है कि "विद्या ददाति विनयम्" जिसने अपने कर्त्तव्य का पालन बिना अहंभाव के किया वह विनीत विनय कहते है दूसरे के दुःख से दुःखी होने को। जब दुःख का अनुभव करेगा तो दूर करने का यत्न भी करेगा।

एक बिलौर (पत्थर) का गोला लो और उसके पास गुलाब का फूल रखिये। फूल प्रतिबिम्ब उस गोले पर पड़ेगा। किन्तु मिट्टी का ढेला उस प्रतिबिम्ब को ग्रहण नहीं कर सकता।

महात्मा बुद्ध जंगल में थे। एक व्याघ ने पक्षी को तीर मारा वह गिर पड़ा। महात्मा बुद्ध ने उस पक्षी को उठा कर तीर निकाल दिया। इतने में व्याध आ गया। उसने पक्षी को मांगा। व्याध ने कहा कि मैंने इसे तीर से गिराया है। महात्मा बुद्ध ने कहा कि यह मेरा है क्योंकि मैंने इसे बचाया है अन्त में निर्णय यह हुआ कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा।

यदि आपका अन्तःकरण पवित्र हो तो क्या यह अछूत, अछूत रह जायें। मैंने संयुक्त प्रान्त में देखा वहां लोग कहते थे कि यह महात्मा गांधी जी का वचन है कि वे अछूतों के दुःख से दुःखी हैं। उनकी आज्ञा है कि इनके लिए मन्दिर खोल दो। मन्दिर खोल दिये गये। किन्तु ज्यों ही अछूत मन्दिरों से निकले, गंगा जल की छिड़काव करा दी गई। अरे भाई! यह सोचो कि जो गंगा जल मन्दिरों को शुद्ध करता है उसे इन अछूतों पर ही क्यों नहीं डाल देते। सारा झगड़ा ही समाप्त हो जायेगा। कितना अच्छा उपाय है।

आर्य समाज में भी अभी निर्बलता है। अभी शक्ति नहीं आई जो समाज में एकता उत्पन्न कर दे। मैं बरेली गया वहां अछूतोद्धार पर व्याख्यान हुए। एक व्यक्ति ने विरोध किया कि महाराज ये अछूत तो पांव के जूते हैं। इन्हें सिर के साथ कैसे मिलाया जाये। सर पर तो पगड़ी ही रहेगी। मैंने उत्तर दिया भाई जब समय जाता है तो पगड़ी पांव पर गिरती है और जूती सिर पर पड़ती है। यह बड़ाई का अभिमान झूठा है। बड़ा वह जो बड़प्पने का काम करे स्वयं अपनी प्रशंसा न करे। बड़े से बड़ा भी वह मनुष्य छोटा गिना जायेगा जो स्वयं अपनी प्रशंसा करेगा। प्रशंसनीय जिससे जाति का गौरव बढ़े।

आपके पास मोटर है आप बड़े आदमी हैं किन्तु जब यह कहा जाता है कि भारत वासी पराधीन हैं तो सबकी निन्दा होती है। ऋषि समदर्शी होता है। उसकी दृष्टि में सब समान हैं। सौभाग्य से पूर्वजों ने हमारे लिए सुन्दर मार्ग बनाया है। किन्तु हम हैं जो उस पर चलते नहीं। देश सम्प्रदायों में बंट चुका है। धन का उचित उपयोग सार्वजनिक कार्यों में किया जाता है।

मध्य प्रदेश के मुसलमान भी हिंदी जानते हैं। वहां जिला सागर का इन्स्पैक्टर मुसलमान था। इसने 'बूढ़े का व्याह' शीर्षक की एक बहुत अच्छी कविता लिखी है। एक ब्राह्मण ने रुपया लेकर अपनी कन्या का विवाह बूढ़े व्यक्ति से कर दिया। उस कन्या की दशा का वर्णन इसकी कविता में है।

इस देश के विद्वानों के पास विश्व के कोने–कोने से लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते थे। इतिहासज्ञ पांच हजार वर्ष से पूर्व का वृत्तान्त नहीं जानते। किन्तु इस देश की दिशा बिगड़े साढ़े पांच हजार वर्ष हो गये यह देश महाभारत से एक सहस्त्र वर्ष पूर्व बिगड़ने लगा था। अर्जुन के पूछने पर कृष्ण जी ने कहा था कि लोग वेद द्वारा प्रतिपादित मार्ग पर आचरण नहीं कर रहे। इसी कारण दुःख पा रहे हैं। उपनिषद् काल में सत्य की प्रशंसा होती थी। उपनिषद् पांच हजार वर्ष पूर्व के हैं। दर्शन उससे भी पूर्व के। उस समय कोई सम्प्रदाय नहीं था। सारस्वत और गौड़ का भेद भाव नहीं था। योग्यतानुसार कार्य का विभाजन कर रखा था। न ब्राह्मण अच्छा था न शूद्र बुरा। सम्प्रदायों के बढ़ने से भारत का गौरव क्षीण हो गया। आर्य समाज ने इन्हें सीधे मार्ग पर लाना था, पर वह स्वयं न सम्भल सका। आर्य समाज में विचार शक्ति है किन्तु इन विचारों से क्रियात्मक रूप दिया जाए तब तो संसार बातों की बातें ही समझता है। यह है भी ठीक ! सत्य की जय और असत्य की पराजय।

आप कहेंगे शरीर मल मूत्र का स्थान है। इसमें सत्य कहां ईश्वर सत्य है वह निर्मल है। किन्तु यदि यत्न किया जाये तो कौन–सी वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती।

बाल विवाह बुरा है। पहले किया करते थे तो प्रशंसा होती थी किन्तु अब वह बात कहां रही।

आपने अपना कर्त्तव्य भुला दिया तो दूसरे देश के लोगों ने आक्रमण किये। शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण करने से पूर्व यहां दो आदमी साधु वेष बनाकर भेजे। उनके द्वारा उसे यहां की स्थिति का पता लग गया। वे लगातार दो साल यहां रहे और उसके बाद उन्होंने गौरी को पत्र लिखा।

हर किसे नाल्ला किन्दाज दस्ते गैर हिन्दू अज दस्ते हिन्दू बर बाद। हर एक दो दूसरे के हाथों नष्ट होते देखा था किन्तु हिन्दू को हिन्दू के हाथों नष्ट होते देखा। यह तेरह सौ वर्ष पूर्व का दृश्य है जो बुद्धिमान थे उन्होंने मार्ग को सच्चाई से प्यार किया। सच्चाई के सहारे वे सुख प्राप्त कर गए और सत्यस्वरूप परमात्मा से मिल गये।

झूठ रोग है और सत्य स्वास्थ्य। जो मनसा वाचा कर्मणा सत्यनिष्ठा है उस के मार्ग को कोई नहीं रोक सकता। यह त्रिकाल सत्य है। परमात्मा को तो सत्य स्वरूप कहा गया है। जिसके हृदय में वे हैं वहां सच्चाई है। ईश्वरोपासना के लिये किसी भी बाह्य वस्तु की आवश्यकता नहीं है। यदि मूर्ति ईश्वर का रूप है तो उसके पुजारियों में दया आदि गुण होने चाहिये। सब कहते हैं कि मनुष्य को मनुष्य से घृणा नहीं करनी चाहिये किन्तु ईश्वर के पूजक ही सबसे अधिक घृणा करते हैं।

बौद्ध युग में शंकराचार्य उज्जैन पहुँचे वहां आस्तिकता का प्रचार किया। कईयों ने रोका किन्तु एक न मानी। राजाज्ञा हुई कि इन्हें फांसी पर लटका दिया जाए ऐसा नियम था कि फांसी दिए जाने वाले व्यक्ति से उस की क्या इच्छा है? यह पूछा जाता था। भगवान् शंकर ने कहा कि जिसने मुझे फांसी का दण्ड दिया है उससे मिलना चाहता हूँ। तेजस्वी शंकराचार्य राजसभा में उपस्थित हुए, कहा कि ऐ राजन्। मैं ईश्वर को मानता हूँ। यदि वह न भी हो तो कोई आपत्ति नहीं। किन्तु यदि मेरा ईश्वर हो तो कल्पना करो तुम्हारी क्या दशा होगी। ऋषि दयानन्द ईश्वरनिष्ठ थे। उन्होंने स्वयं कष्ट उठा कर लोगों को मार्ग दिखाया। इसलिए यदि आप चाहते हैं कि ईश्वर आप पर दया दृष्टि रखें तो उसकी प्रजा से प्रेम करो, यह सत्य का मार्ग है।

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री उम्मेद सिंह आर्य जी की बड़ी बहन श्रीमती सावित्री उर्फ आशा बाईसा का आकस्मिक निधन

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री उम्मेद सिंह आर्य, जोधपुर (राजस्थान) की बड़ी बहन श्रीमती सावित्री उर्फ आशा बाईसा का आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 4 जुलाई, 2024 को कागा श्मशान भूमि पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनका विवाह अनासागर मगरा पुंजला, जोधुपर निवासी श्री अशोक सिंह जी के साथ हुआ था। बहन जी आर्य विचारों से ओत–प्रोत थीं। उन्होंने अपने जीवन में एक धर्मपारायणा गृहिणी का दायित्व निभाते हुए परिवार एवं समाज के लिए कार्य करती रहीं। उन्होंने अपने पीछे अपने पति श्री अशोक सिंह साखला, सुपुत्र श्री देव आर्य तथा सुपुत्री तान्या आर्या सहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। किसी भी परिवार की गृहस्थी में महिलाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। अतः उनके आकस्मिक निधन से परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। बहन जी के निधन पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें। ज्ञातव्य हो कि श्री उम्मेद सिंह आर्य जी आर्य वीरदल के माध्यम से आर्य समाज के कार्यों के लिए दिन–रात लगे रहते हैं।

वेदों में गाय का महत्त्व

—रामशरण वशिष्ठ

वेदों में गौ शब्द बहुत व्यापक रूप रखता है। इस शब्द के यौगिक अर्थ हैं। साधारणतया यह शब्द गाय के अर्थ में बोला जाता है। परन्तु निरुक्त के अनुसार यह गया के अतिरिक्त पृथिवी, वाक्, रश्मि, इषु, इन्द्रिय, आपः (जल), दुग्ध (दूध) आदि के लिए भी आता है। मीमांसक जी के लेख के अनुसार इस शब्द के ४७ अर्थ हैं। हम यहाँ पर कुछ मंत्र दे रहे हैं जिन में इस शब्द का भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयोग पाया जाता है।

पृ० १–१६४–१७ में यह उषः काल का वाचक है। पृ० १०–१११–३ में इसका अर्थ पृथिवी है। पृ० १०–१०३ में और पृ० १६–१३–६ में गो जंतु के और पृ० १०–१३३–७ में भी पृथिवी का अर्थ है। पृ० १०–२७–१४ में यह आकाश का वाचक है। पृ० १०–६६–११ में इसका अर्थ सूर्य होता है। पृ० ८–४५–३० में इसका अर्थ वर्षा है। पृ० १०–४६–३ में इसके अर्थ मेघ हैं। पृ० ८–५४–१०–११ में यह वाक् की जगह आता है। पृ० ६–१०८–६, गावः के अर्थ नदियाँ हैं। पृ० १०–६८–६ में यह दिन–रात के अर्थों में आया है। पृ० ८–८६–७ में यह सूर्य की रश्मि का वाचक है। पं० भगवद्दत जी ने अपनी पुस्तक Story of creation में cow rays का वर्णन बहुत विस्तार से किया है। पृष्ठ ३०१ से ३०८ और पृ० ७–३६–१ में 'विरश्मिभिः संसजेसु यो गाः यहाँ पर सूर्य की रश्मियाँ अर्थ है। पृ० VI–६४ में भी ऐसा वर्ण आता है। गौ के और भी कई अर्थ होंगे जिनका हमको ज्ञान नहीं। गोपा का शब्द ग्वाले के अर्थ में और परमात्मा के अर्थ में भी आता है। इसी प्रकार गोष्ठी का अर्थ वर्षा का घर मेघ है।

यह शब्द जिन वेद मंत्रों में साधारण गाय का वाचक है वे भी बहुत हैं। पं० सातवलेकर जी ने ऐसे ५०० से अधिक मंत्र वेदों से एकत्रित किये हैं और एक पुस्तक लिखी है। परन्तु हम यहाँ विस्तार के भय से केवल कुछ मंत्रों का वर्णन करेंगे। गाय का वर्णन अधिकतया पृ० १–१६४–२६–२७, पृ० ४–५८–३ से ६, ६–२८, ६–५४–१ से ७, ४–५–३७, १०–१६, १०–१६६, में पृ० (यजु०) १२–३२, १३–४३, और अथर्व २–२६, ३–१०, ३–१२, ३–१४, ४–२६, ५–१८, ६–५६, ८–२–१५–१६, ८–७–२५, ६–४–४, ६–४–१६, २०, २१–१२–१–१२, २–४–६, ८, १८–३–६८, १८'४–३०, ३२–३३ में आता है। अथर्व वेद के १० वे काण्ड के ६वें और १०वें सूक्तों में शतौदनी और वशा गाय का विस्तार से वर्णन है। गाय को वैदिक काल में धन कहा जाता है। गाय का मनुष्य मात्र को बहुत लाभदायक होना बार–बार वर्णित है। गाय का दूध बलकारक भोजन है। (१०–१७५–२) निर्बलता को दूर करता है। (पृ० ६–२८–६) गाय का दूध गरम कर के पीना चाहिए पृ० X–१७६–३। घी से यज्ञों में हवि दी जाती है। बैल खेती करने के काम आते हैं। गाय के बछड़े व बछड़ियाँ होती हैं (८–८२–१३) जिनसे धन बढ़ता चला जाता है। (अ०

III–११) गाय कई रंगों की होती है, सफेद, लाल, काली, पीली, डब्बों वाली। काली गाय का दूध सर्वोतम बताया है (अ० १८–४–३४) पीली गाय अधिक दूध देती है। (अ० १०–६) दूसरे दूध देने वाले जानवरों के दूध की तुलना पृ० २१–६०, में की गई है और बताया है कि गाय का दूध सर्वोत्तम है। वैदिक काल में आर्य लोग घरों में गाय रखते थे। घरों में दूध घी–दही के भरे धड़ों का वर्णन अ० ३–१२–७ और अ० १८–३–६८ में भी मिलता है। घरों में गाय के बछड़ों बालकों के साथ खेलते देख कर चित्त प्रसन्न होता है (३–१२–३) गाय के चरने को जाने और वापस आने का वर्ण X–१६ पृ० में है। कई वेद मंत्रों में प्रार्थनाएँ हैं कि गाय चरागाह से घर वापस आ जाये, गुम न हो, कहीं गिरे नहीं। (X–१६) गाय की गोष्ठियों का मंत्रों में वर्णन मिलता है। यह भी बताया है कि घी आयुवर्धक है (अ ११३) पृ ८–१०–१५, १६ में गाय को 'गां अनागां अदितिर्म्' बताया है। वह शान्त स्वभाव वाली है। ऐसा पता चलता है कि गाय को पिछले पाँवों से बांधे (पृ० ४–१२–६) हरे घास की चरागाह के लिए भी प्रार्थना मंत्र है। (अ० ८–४४–३) हरे घास की चरागाह के लिए भी प्रार्थना मंत्र है। (अ० ८–४४–३) गायों को सुन्दर वस्त्र और सोने के भूषणों से सजाने का भी वर्णन कई मंत्रों में पाया जाता है। (अ० ८–५४–१० पृ० १०–१७५–२) गाय कन्या के विवाह में वर को दहेज में भेजी जाने का वर्णन पृ० १०–८५–१३ में है। गाय रूपी भेषज रोग निवारण करने के लिए दिये जाने का वर्णन पृ० १०–६७ में आता है। गाय ब्राह्मण को दान किये जाने का कई स्थानों पर वर्णन मिलता है। वह गाय अन्धी–लूली न हो, दूध देती हो। (A १२–४–१) ३५ ब्राह्मण की गाय को कोई हानि न करे (A १४–४६)। एक मंत्र में राजा ऐसे पुरुष को दण्ड दे। ऐसा आता है। (ऋ० १०–२–१५)।

गाय के दूध–दही को सोम में मिला कर पीना बताया है (R ३–४२ य० १६–६) वेदो में जो शब्द गाय के लिए आते हैं, उनमें सबसे प्रसिद्ध अघ्न्य है। यह ऋग्वेद के मंत्रों में आता है और दूसरे वेदों में भी। वेद गाय को न मारे जाने वाली कहता है। गाय के मारने वाले को गोली से मार दो, ऐसा अ० १–१६–४ में है। य० ३०–१८ में भी आता है। अथर्व वेद में राजा का कर्त्तव्य बताया है कि गौ घातक को दण्ड दे। बारबार वेदो में गाय को न मारने की आज्ञा है। यहाँ तक कि यदि कोई दुष्ट गाय को लात मारे तो वह अपराधी है। यदि कोई गोमांस खाये तो उसके कुल का नाश हो ाता है। (। अथर्व १३–१–४६)। गाय को रुद्रों की माता (R ८–१०२–१५) और इन्द्र की तुलना दी है (अ० ३–१४–२)। अथर्व ८–६–२–३ में कहा है कि मांस खाने वाले को हम मारते हैं। वेद अहिंसा का प्रचारक है। (य० १२–३२) व (अ० ३–२८–१) इस पर अधिक न लिखते हुए इतना ही लिखते हैं कि वेद में कहीं भी मांस खाने की आज्ञा नहीं। आर्य लोग तो गाय को माता के समान पूजनीय समझते हैं। यह पाश्चात्य विद्वानों की भूल है कि वे मंत्रों के गलत अर्थ करते हैं और दोष लगाते है कि यज्ञों में पशु वध किया जाता था– आर्य लोग गोमांस खाते थे। उनका यह सब लिखना निराधार है। वेद तो बार–बार अध्वर का शब्द यज्ञ के लिए प्रयोग करता है। अध्वर के अर्थ 'हिंसा रहित' के हैं। एक नहीं, बीसियों मंत्रों में ऐसा आता है। चारों वेद कहते हैं कि यज्ञ अध्वर है (ऋ० १–१–८, १–१४–२१, १–१२४–४, य० १५–३८, २–४, सा० २–१,१६,३८ में अथव ४–२४–३, १४–२–३२ १६–४२–२) में ऐसा ही है। पर फिर भी पाश्चात्य विद्वानों और उनके अनुयायी हिंदुओं ने वेद के आशय को न जान कर इसके विपरीत लिखा है। ये लोग वेद के मंत्रों के अर्थ करने की शैली को न जानकर और वैदिक संस्कृत के शब्दों के अर्थ न जानकर अपनी बुरी भावनाओं को लेकर वेद को दूषित करते रहते हैं। इनका लक्ष्य आर्यों को ईसाई बनाने का रहता है। आर्यों को चाहिए कि उनकी इस चाल को शीघ्र समझ जायें। वेद को ठीक–ठीक समझने के लिए आवश्यक है कि शब्दों के यौगिक और प्रकरण के अनुसार अर्थ किये जायें। नहीं तो भूल होती रहेगी और संशय होते रहेंगे।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689

ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी का कुशल क्षेम जानने के लिए स्वामी आर्यवेश जी व उनके साथी चित्तौड़गढ़ पहुँचे

आचार्य जी ने स्वामी जी व अन्य साथियों से मिलकर विशेष प्रसन्नता व्यक्त की

20 जून, 2024 को आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कार्यकारी प्रधान श्री रामनिवास जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के कार्यकारी प्रधान श्री सज्जन सिंह राठी एवं श्री बंटी आर्य, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् वैदिक मिशन ट्रस्ट, मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री से मिलने तथा उनका कुशल क्षेम जानने के लिए सड़क मार्ग से चित्तौड़गढ़ पहुंचे। विदित हो कि डॉ. सोमदेव जी लम्बे समय से पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं और उनके प्रयास से पुनः प्रारम्भ हुए कन्या गुरुकुल का संचालन कर रहे हैं। गत् दिनों वे अस्वस्थ रहे, इसलिए स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके साथी उनसे मिलने चित्तौड़गढ़ गये थे। डॉ. सोमदेव जी ने स्वामी जी तथा अन्य आर्य नेताओं से मिलकर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि स्वामी जी आप अपने अत्यधिक व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर मुझे मिलने के लिए पधारे हैं इससे मुझे एक नई ऊर्जा एवं उत्साह मिला है। मुझे यह ज्ञात हुआ है कि आप जेसे सहृदय एवं आत्मीयता से ओत–प्रोत संन्यासी जब तक आर्य समाज में है तो निश्चय ही हम जैसे उपदेशक, प्रचारक एवं वैदिक विद्वानों को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है। निःसंदेह आज आपने अचानक यहाँ पहुंचकर मुझे अचंभित कर दिया है। मैं आपकी व्यस्तता को भलीभांति जानता हूँ, किन्तु आपके हृदय में मेरे लिए जो स्थान है मैं उसे भी भलीभांति जानता हूँ। आपकी कृपा व स्नेह बना रहे यही मेरी अपेक्षा है। डॉ. सोमदेव जी ने अन्य आर्य नेताओं का भी हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया। सायंकाल गुरुकुल की बच्चियों व अध्यापिकाओं के साथ बैठकर हम सभी ने सामूहिक संन्ध्या की और उसके पश्चात् आचार्य जी के साथ विशेष विचार–विमर्श किया। उन्होंने बताया कि मैं शरीर से लगभग स्वस्थ हूँ, परन्तु स्मृति पर थोड़ा प्रभाव आया है। स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य जी का उत्साहवर्द्धन करते हुए

कहा कि आप आर्य जगत् के गौरव हो। आपने अपने जीवन में जहां हजारों व्याख्यान देकर बड़े–बड़े यज्ञों में ब्रह्मा पद को सुशोभित करके तथा लगभग 40 विशेष पुस्तकें लिखकर आर्य समाज की जो सेवा की है, उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आपसे मिलने के लिए और कुशल क्षेम जानने के लिए आना हमारा नैतिक कर्त्तव्य एवं दायित्व है। यह आपके ऊपर कोई एहसान नहीं है, क्योंकि आप आर्य जगत् की अमूल्य धरोहर हो। अपने जीवन में घोर तप करके जो विद्या अर्जित की है उसे निष्काम भाव से आपने लाखों लोगों में अपने प्रवचनों, लेखों एवं पुस्तकों के माध्यम से बांटा है। अतः आपका जीवन अमूल्य है और आपके स्वास्थ्य की चिन्ता करना हम सभी का कर्त्तव्य है। मैं कई दिनों से सोच रहा था कि कैसे आपके पास पहुंचकर आपके स्वास्थ्य की एवं कुशलक्षेम की जानकारी लूं, किन्तु आर्य समाज के अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रमों में व्यस्त रहने के कारण सम्भव नहीं हो रहा था किन्तु आज आपके पास आने के लिए विशेष संकल्प किया था और आपसे मिलकर और आपको स्वस्थ पाकर मैं अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ। स्वामी जी ने आचार्य जी से कहा कि आपको जब भी मेरी किसी प्रकार की आवश्यकता अनुभव हो आप एक बार आदेश कर दें, 12 घण्टे के अन्दर मैं आपकी सेवा में उपस्थित रहूंगा। आपके जीवन को मैंने बहुत निकट से देखा व समझा है और इसीलिए मेरी आपके प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा एवं सम्मान है। डॉ. सोमदेव शास्त्री जी से विदा लेकर स्वामी आर्यवेश जी व उनके साथ जयपुर पहुंचे और वहां आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री श्री कमलेश शर्मा व उनके अन्य पदाधिकारियों के साथ आर्य समाज किशनपोल बाजार में आवश्यक बैठक की। बैठक में वरिष्ठ आर्यनेता श्री ओम प्रकाश वर्मा भी उपस्थित थे। बैठक के पश्चात् आर्य समाज आदर्शनगर, राजापार्क, जयपुर की प्रधाना स्व. श्री सत्यव्रत सामवेदी जी की धर्मपत्नी पूज्या बहन मृदुला सामवेदी से मिले और आर्य समाज के सम्बन्ध में विचार–विमर्श किया। उसके पश्चात् आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री रवि नायर एवं आर्य समाज के धर्माचार्य पं. जानकी प्रसाद शर्मा से भी मिलने का अवसर मिला। कर्मठ कार्यकर्ता श्री देवेन्द्र त्यागी व डॉ. मोक्षराज आर्य से भी विचार–विमर्श हुआ। पूज्या बहन सरला जी ने आत्मीय आतिथ्य कर फलाहार एवं अल्पाहार उपलब्ध कराया। बहन सरला जी और उनके पति पं. जानकी प्रसाद शास्त्री जी स्वामी आर्यवेश जी के बहुत पुराने आत्मीय परिवारों में से हैं और स्वामी जी बहन जी को सदैव सच्ची बहन का सम्मान देते हैं। श्री रवि नायर ने स्वामी आर्यवेश जी से आग्रह किया कि एक बार विशेष समय निकालकर आप यहां पधारें और सभाओं को लेकर जो झंझट चल रहे हैं उसको समाप्त कराने में अपनी भूमिका अवश्य निभायें। जयपुर के इस संक्षिप्त प्रवास में अपने सभी परिचितों से मिलने के बाद स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके साथी बहरोड़ पहुंचे और बहरोड़ में श्री बिरजानन्द जी के फार्म हाउस पर भोजन करने के उपरान्त स्वामी जी अपने सहयोगी बंटी आर्य को लेकर रात साढ़े ग्यारह स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली आश्रम पहुंचकर विश्राम किया।

डॉ. परविन्दर कुमार के सुपुत्र चि. अयांश का प्रथम जन्मदिन समारोह पूर्वक मनाया गया

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, बहन पूनम आर्या तथा बहन प्रवेश आर्या आदि ने दिया आशीर्वाद

बहन प्रवेश आर्या के छोटे भाई डॉ. परविन्दर के सुपुत्र चि. अयांश के प्रथम जन्मदिन के अवसर पर दिनांक 14 जून, 2024 को यज्ञ एवं आशीर्वाद समारोह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में यज्ञ हुआ और जन्मदिन की विशेष आहुतियां भी प्रदान की गई। यज्ञ के उपरान्त बालक अयांश तथा उसके पिता डॉ. परविन्दर तथा माता श्रीमती सुमन को उपस्थित सभी विद्वानों एवं बुजुर्गों ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस आशीर्वाद समारोह में स्वामी आर्यवेश

जी के अतिरिक्त स्वामी आदित्यवेश जी, बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या जी, अयांश के दादा मा. नफे सिंह, कर्नल आर.के. सिंह, सेवानिवृत्त डी.एस.पी. श्री अर्जुन सिंह, श्री रामलाल सिंह, अयांश के नाना श्री सुल्तान सिंह आदि के अतिरिक्त मा. प्रदीप कुमार, श्री विनीत कुमार, श्री विनय कुमार, श्रीमती शकुन्तला, श्रीमती प्रभा, बहन शशि, श्रीमती कविता ठेकेदार, बहन रिंकू आर्या आदि विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के उपरान्त सभी ने भोजन का आनन्द लिया।

प्रो० विट्ठलराव आ५, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।